साई व्हाइब्रियोनिक्स पत्रिका

www.vibrionics.org

'' जब आप किसी हतोत्साहित, निराश या रोग ग्रस्त व्यक्ति को देखते हो,
वहीं आपका सेवा क्षेत्र है ''..... श्री सत्य साई बाबा

खण्ड 4 प्रकाशन 1 जनवरी/फरवरी 2013

ॐ डा.जीत के अग्रवाल की मेज से ॐ

प्रिय चिकित्सक

आप सभी को वर्ष 2013 के लिए सुखमय एवं पावन भविष्य की कामनाओं के साथ पत्रिका लेखन का आरंभ करता हुं।

स्वामी की असीम कृपा से विगतवर्ष मे हमने व्हाइब्रियोनिक्स गतिविधियों मे अनेक उपलब्धियां अर्जित की है। हमने प्रशिक्षण को संपूर्णतः नया रुप दिया है। प्रशिक्षण की गुणवत्ता बढाने हेतु प्रत्येक स्तर पर 6–10 हप्तों का पत्राचार पाठयक्रम शुरु किया गया है। पत्राचार पाठयक्रम की अवधी पूर्ण होने पर 2–5 दिनों का व्यावहारिक प्रशिक्षण सत्र होगा ताकि व्हाइब्रियोनिक्स चिकित्सक की योग्यता प्राप्त हो सकें। गत वर्ष कई नए चिकित्सकों को प्रशिक्षित किया गया। कई विद्यमान चिकित्सकों की उच्च श्रेणी पर पदोन्नती हुई है तथा कई चिकित्सक प्रमाणित प्रशिक्षक बन चुके है। समर्पित प्रशिक्षकों तथा विश्वसनीय सलाहकारो के अथक प्रयासों के परिणाम स्वरुप व्हाइब्रियोनिक्स अभियान का तेजी से विस्तार हो रहा है। व्हाइब्रियोंनिक्स परिवार मे सामिल हुए समस्त नए चिकित्सकों का हम सहर्ष स्वागत करते है।

हमारे कार्य के विस्तार के साथ हि अब हमे प्रशासन एवं प्रबंधन मे सक्रिय व्हाइब्रियोंनिक्स चिकित्सको के सेवाओं की समन्वयक के रुप मे आवश्यकता महसूस हो रही है। आप अगर अपने राज्य अथवा देश मे व्हाइब्रियोंनिक्स सेवा के लिए किसी भी हैसियत से सेवाए देना चाहते हो तो कृपया अपना नाम, अर्हता तथा अनुभव की जानकारी देते हुए ई–मेल लिखें। अगर हम पर्याप्त समन्वयक नियुक्त कर पाते है तब प्रशांति निलयम मे इस वर्ष सभी पदाधिकारीयों की सभा रखने का हमारा मानस है।

चिकित्सकों द्वारा लगातार मौखिक रुप से सफल रोग निवारण की अदभुत कहानीयों का वर्णन किया जा रहा है परंतु वें इन सबका लिखित संकलन नही कर पा रहे। इन केसेस की रिपोर्ट तयार करने हेतु हमने अनेक स्वयंसेवक नियुक्त किए है जिन्होने फोन द्वारा संपूर्ण केस हिस्टरी के संकलन हेतु अपनी सेवाए प्रदान करने की पेशकश की है। यह संकलन उनके द्वारा हमे प्रकाशन हेतु ई–मेल किया जाएगा। अगर आप इन स्वयंसेवकों की सेवाए लेने के इच्छुक है तब हमे 99sairam@vibrionics.org पर ई–मेल करे, हम आपको इनके संपर्क संकेत स्थलों की जानकारी देंगे। साथ ही अगर आप के अनुभव मे कोइ विशिष्ट केस है जिसे आप अन्य चिकित्सको के लाभ हेतु प्रकाशित करना चाहते है, हमे अवश्य लिख भेजे। अतः आजसे ही अपनी उल्लेखनीय केसेस को संकलित करना आरंभ कर दीजिए।

माह दिसंबर मे हमने दो विशेष पुनश्चर्या (रिफ्रेशर) वर्कशाप आयोजित किए – एक मुंबई मे तथा दूसरा केरल मे जिनके फोटो शीघ्रही वेबसाइट पर होंगे। मुंबई वर्कशाप मे महाराष्ट्र तथा गोआ राज्य के 108 चिकित्सकों का सहभाग था। हम आभारी है श्री सत्य साई सेवा संघटन के अखिल भारतीय अध्यक्ष तथा राज्याध्यक्षों समेत उन वरिष्ठ पदाधिकारीयों के जिन्होने व्हाइब्रियोनिक्स को विनाशर्त सहकार्य करते रहने का आश्वासन दिया है। केरल राज्य के कसरगौड जिले मे आयोजित वर्कशाप मे 51 चिकित्सकों ने हिस्सा लिया। वहां के राज्याध्यक्ष ने व्यक्तिगत रुप से सहभागी होने मे असमर्थता के बावजूद सहभागीयों को टेलिफोन पर प्रेरक संदेश दिया। इस जिले के चिकित्सकोंने विश्व की सबसे भयानक एन्डोसल्फान त्रासदी से पीडीत लोगों की चिकित्सा हेतु विशेष प्रकल्प चलाया है। हमने पिडीत क्षेत्र को भेट देकर चिकित्सको द्वारा किए गए सराहनीय कार्य को प्रत्यक्ष देखा है।

मै पुनः आपको मासिक रिपोर्ट के महत्व का स्मरण कराता हुं। हमारे लिए यह जानना अत्यंत महत्व पूर्ण है कि आप सक्रिय चिकित्सक हो। केवल उसी स्थिति मे हम आपके संपर्क संबंधी जाानकारी आपके क्षेत्र के मरीजों को दे सकते है। साथ ही हमे वार्षिक अहवाल तयार करने मे मदद होती है। आपके अनुभव तथा मरीजों के व्यक्ति वृत्त हमारे संकलन के अद्यतनीकरण मे सहायक होते है। हम आपसे निवेदन करते है कि आप मासिक रिपोर्ट नियमित रुपसे भेजते रहिए।

नई दिल्ली के कुछ चिकित्सको ने पेड पौधों पर प्लान्ट टानिक का सफल प्रयोग किया है। परिणाम आश्चर्यजनक है। पत्रिका के अगले संस्करण मे विस्तृत ब्यौरा दिया जाएगा।

अंत मे मै आपको अति अदभुत नव वर्ष की कामना करता हुं..... साथ ही यह भी कामना करता हुं कि आप सभी के ह्रदयों मे स्वामी प्रेम भर दे तथा शरीर उर्जा से भर दे एवं आपने चुने हुए इस सेवा माध्यम को आप दुगुने उत्साह और उमंग के साथ जारी रखे।

सांई की प्रेममय सेवा मे

जीत अग्रवाल

****

सम्मिश्रण की सफलताओं का व्यक्ति वृत्त (केस हिस्टरीज़)

1. भय तथा अपचन 2854...यूके

एक महिला उनके लगभग 3 वर्ष की आयु के बालक को चिकित्सक के पास लेकर आयी। वह बालक गत दो वर्षो से अपचन की समस्या से पिडीत था। वह गैर मिलनसार और इतना भयग्रस्त हो चुका था कि अपने पिता से भी डरता था। खांस कर जब उसे शौच करनी होती थी, वह अत्यंत भयभीत हो जाता था । जब चिकित्सक ने उस बालक से बातचित की वह अत्यंत भयभीत हो कर अपनी माँसे बिलग गया। उसे भूक भी नही लगती थी। व्हाइब्रो चिकित्सक ने उन्हे निम्न सम्मिश्रण दिया –

CC4.4 Constipation + CC15.1 Mental & Emotional tonic + CC12.2 Child tonic…TDS

बालक के अभिभावक के बताएनुसार पहली ही खुराक मे अदभुत असर हुआ। बालक ने अपने पिता के साथ सोने की इच्छा जतायी जब की हमेशा वह अपनी माँ के साथ सोया करता था। और अगले कुछ हि दिनो मे उसका शौच का भय भी दूर हो गया और वह नियमित रुप से शौच करने लगा। अब वह मिलनसार और तनावमुक्त हो गया है। व्हायब्रो चिकित्सक ने भी पाया कि अब वह अपनी माँ से बिलगे नही रहता। उसकी उम्र के अन्य स्वस्थ बालको के भाँति वह दौडने खेलने लगा है। उसे और दो सप्ताह तक व्हायब्रो की खुराक दिन मे दो बार, फिर दिन मे एक बार, दवा खत्म होते तक दी जाएगी।

If using a Sai Ram Potentiser give: NM6 Calming + NM13 Constipation + NM69 CB8 + NM75 Debility + NM90 Nutrition + BR2 Blood Sugar + BR4 Fear + BR8 Constipation + SM5 Peace & Love Alignment + SM9 Lack of Confidence.

++

2. अनियमित मासिक धर्म 2799…यूके

एक अंग्रेज महिला डाक्टर जिनकी उम्र 33 वर्ष है वें व्हाइब्रो चिकित्सक के पास आयी, उन्हे यौवानारंभ से ही अनियमित मासिक धर्म की समस्या थी। उन्हे मासिक धर्म हमेशा विलंब से होता था जो 35 – 40 दिनो के अवकाश मे होता था जब की सामान्यतः 28 दिनो मे होना चाहिए। उन्होने ॲलोपॅथिक दवा भी ली जिसका लाभ नही हुआ। व्हाइब्रो चिकित्सक ने उन्हे निम्न सम्मिश्रण दिया –

CC8.1 Female tonic + CC8.8 Menses irregular + CC15.1 Mental & Emotional tonic + CC17.3 Brain & Memory tonic…TDS for 2 months.

दो माह मे ही उनका मासिक धर्म नियमित हो गया। उन्हे अगले तीन माह तक व्हाइब्रो की खुराक दिन मे तीन बार लेने की सलाह दी गयी, फिर खुराक दिन मे दो बार की गई। उनका मासिक धर्म अब 28 दिनों मे आ रहा है, अर्थात नियमित हो चुका है और पुरे 5 दिन रहता है। चूंकि उन्होने लंबे समय तक परेशानी झेली है इस कारण खुराक को कम (दिन मे एक बार) करने की जोखिम वें नही लेना चाहती।

If using a Sai Ram Potentiser give: NM23 Menses Irregular + OM24 Female Genital + BR16 Female + SR309 Pulsatilla 30C + SR515 Ovary + SR537 Uterus.

++

3. मानसिक असंतुलन [2799...यूके]

इस महिला की उम्र 23 वर्ष है। मनोविज्ञान विषय की स्नातक यह महिला विगत 3 वर्षोंसे गंभीर मानसिक असंतुलन से पिडीत है। जब अभिभावक उन्हे व्हाइब्रो चिकित्सक के पास लेकर आए तब वें आक्रमक थी, खुदखुशी की मानसिकता भी रखती थी और जोर जोर से चिल्ला रही थी। अभिभावकों से जानकारी मिली कि ॲलोपॅथिक दवा बेअसर रही और उसके अवांछित परिणामों से वें त्रस्त थी। व्हाइब्रो चिकित्सक ने उन्हे निम्न सम्मिश्रण दिया –

#1. CC15.1 Mental & Emotional tonic + CC15.2 Psychiatric disorders + CC17.3 Brain & Memory tonic…QDS for two weeks then reduced to TDS.

एक माह बाद उनके स्वास्थ्य मे 50% सुधार हुआ। अब वह मरीज निद्रानाश की शिकायत करने लगी अतः उन्हे निम्न सम्मिश्रण दिया गया –

#2. CC15.6 Sleep disorders…1 गोली निद्रासमय के आधे घंटे पहले; निद्रा न आने पर एक और गोली निद्रा समयपर। इस पर भी निद्रा न आने पर, हर आधे घंटे एक गोली। पंद्रह दिनो बाद उनके अभिभावक नें खबर दी की वें सामान्य रुप से सो पा रही है और उनकी ॲलोपॅथिक खुराक क्रमशः घटाई जा रही है। मरीज ने पांच माह तक उपरोक्त दोनो सम्मिश्रण लेने के बाद ॲलोपॅथिक दवा पूर्णतः बंद कर दी। मरीज अब पूरी तरह स्वस्थ है, उन्होने नई नौकरी भी शुरु कर दी है। **#1** सम्मिश्रण की खुराक घटाकर दिन मे दो बार की गई है परंतु नींद की खुराक पूर्ववत ही ले रही है।

If using a Sai Ram Potentiser give: NM6 Calming + NM64 Bad Temper + NM69 CB8 + SM1 Removal of Entities + SM2 Divine Protection + SM4 Stabilising + SM5 Peace & Love Alignment + SR268 Anacardium 50M + SR273 Aurum Met CM + SR410 Stramonium 1M + SR458 Brain Whole.
For sleeping: NM28 Sleep + SM5 Peace & Love Alignment + SM8 Insomnia.

++

4. अस्पताल वाइरस, लंबे अवधी की अन्न और रबर की प्रत्यूर्जता (एलर्जी) [2802...यूके]

25 वर्ष की आयु के दंत चिकित्सक की व्हाइब्रो चिकित्सक से मिलने की वजह यह थी की अस्पताल मे कार्य के दौरान जडे वाइरस से वे मुक्त नही हो पा रहे थे। वाइरस के कारण उन्हे पेचिस और थकान तथा सिर मे भारी पन रहता था। उन्हे मुंगफल्ली व चने से भी एलर्जी थी। इसके अलावा उन्हे अपने कार्य के दौरान इस्तमाल किए जाने वाले रबर के दास्तानों से खुजली होती थी। व्हाइब्रो चिकित्सक ने उन्हे निम्न सम्मिश्रण भेजा –

#1. CC9.2 Infections acute + CC4.6 Diarrhoea + CC19.2 Respiratory allergies + CC19.5 Sinusitis….6TD for the virus.

#2. CC21.3 Skin allergies + CC4.10 Indigestion + CC4.2 Liver & Gallbladder tonic + CC15.1 Mental & Emotional tonic…TDS for the chronic allergies.

दोनो सम्मिश्रणों को दिनमे अलग अलग समय पर लेने की सलाह दी गई। दो माह बाद उन्होने जानकारी दी की उनकी पेचिस की तकलीफ मे केवल तीन दिनों मे ही सुधार आया तथा शीघ्र ही पूरी तरह रुक गई। उनका पचन भी अब बेहतर था और वे चना एवं मुंगफल्ली खा पा रहे थे। रबर के दास्तानों से होने वाली खुजान भी अब कम हो गई थी। उन्हे सम्मिश्रण **#2** की तीन और शिशियां भेजी गई तथा सलाह दी गई कि स्वास्थ्य स्थिर होते ही खुराक घटा दे। व्हाइब्रो चिकित्सक ने जानकारी दी है कि मरीज अब काफी राहत महसूस कर रहा है।

*If using a Sai Ram Potentiser give: **#1.** NM36 War + NM62 Allergy-B + NM80 Gastro + BR13 Allergy + BR14 Lung + BR15 Sinus. **#2.** NM27 Skin-D + NM29 SUFI + NM102 Skin Itch + BR9 Digestion + SR528 Skin*

++

5. जनन अक्षमता [01476...भारत]

एक महिला जिनकी उम्र 33 वर्ष है, उन्हे विवाह के 8 वर्षो बाद भी संतती नही हुई थी। ॲलोपॅथि के विभिन्न कृत्रिम उपाय अजमाने पर भी वें माँ नही बन पायी। अक्तुबर 2011 मे जब वें व्हाइब्रो चिकित्सक के पास आयी वें तनाव और चिडचिडेपन से ग्रस्त थी। वें विगत 6 वर्षो से डायबिटीस की अलोपॅथिक दवा और हाइपोथाइराइड के लिए विगत 3 वर्षो से अलोपॅथिक दवा ले रही थी। व्हाइब्रो चिकित्सक ने उन्हे निम्न सम्मिश्रण दिया –

#1. CC6.2 Hypothyroid + CC6.3 Diabetes + CC8.1 Female tonic + CC8.4 Ovaries & Uterus...TDS

दस ही दिनों मे उन्हे गर्भधारणा हुई। व्हाइब्रों चिकित्सक फोन द्वारा लगातार उनके संपर्क मे थे क्योंकि वें उनकी बिमारीयों के चलते गर्भ की सुरक्षाके लिए चिंतित थी। सम्मिश्रण निम्नानुसार बदला गया।

#2. CC6.2 Hypothyroid + CC6.3 Diabetes + CC8.2 Pregnancy tonic + CC12.1 Adult tonic + CC15.1 Mental & Emotional tonic…TDS

उन्होने यह सम्मिश्रण उनकी संपूर्ण गर्भावस्था के दौरान तथा एक माह बाद तक भी लिया। मरीज ने अपनी रक्तशर्करा तथा थाइराइड का स्तर (लेवल) निगरानी मे रखते हुए उनकी ॲलोपॅथिक दवा संपूर्ण गर्भावस्था के दौरान नियमित ली। उन्होने गर्भावस्था के पांचवे माह मे इन्सुलीन इन्जेक्शन भी लिया। उनके शिशु का जन्म दिनांक 10 अगस्त को अपेक्षित था परंतु दिनांक 17 जुलै 2012 को सीझेरीयन द्वारा 2.7 किलो वजन वाली उनकी कन्या का जन्म हुआ। आज वह कन्या 5 माह की हो चुकी है। माँ को अब डायबिटीस नही है। उनका थाइराइड लेवल भी नियंत्रित है तथा उनकी थाइराइड की दवा 50 मि.ग्रा. से घटाकर 25 मि.ग्रा. कर दी गई है। शिशु को पूरा पूरा माँ का दूध दिया जा रहा है।
If using a Sai Ram Potentiser give: For infertility: OM24 Female Genital + BR8 Stress + BR16 Female + SM1 Removal of Entities + SM2 Divine Protection + SM4 Stabilising + SM5 Peace & Love Alignment + SM6 Stress + SR261 Nat Mur 200C + SR313 Sepia 200C + SR398 Nat Carb + SR515 Ovary + SR537 Uterus. For Diabetes: NM74 Diabetes + BR2 Blood Sugar + SM17 Diabetes + SR516 Pancreas. For Hypothyroid: SR225 Throat Chakra + SR230 Moonstone + SR261 Nat Mur + SR280 Calc Carb 30C + SR308 Pituitary Gland + SR319 Thyroid Gland + SR320 Thyroidinum + SR568 Hypothyroidism.

++

6. पीठ दर्द 1176...बोस्नीयां

76 वर्षिय वृद्ध ने फोन पर उनके पीठ दर्द के लिए व्हाइब्रो चिकित्सक की मदद मांगी। उनका दर्द मेरूदंड के उगम से उनके दाहिने घुटने तक विस्तार पा चुका था। दर्द इतना ज्यादा था कि वें बिस्तर से उठ भी नही पाते थे। यह तकलीफ उन्हे 20 वर्ष पूर्व पहली बार हुई थी और अब बार बार हो रही थी। अब की बार वे तीव्र वेद निवारक ले रहे थे फिर भी उन्हे आराम नही मिल रहा था। व्हाइब्रो चिकित्सक ने उन्हे निम्न सम्मिश्रण दिया –

NM113 Inflammation + SR267 Alumina 30C + SR404 Picric Acid 1M to be taken immediately the pain starts and to be repeated 30 minutes later.

मरीज को तुरंत दर्द से मुक्ति मिली। दर्द के पुनः उभरने पर उपरोक्त सम्मिश्रण दोहराया गया। दोहि दिनों मे मरीज बिना कष्ट के सीड़ीयां चढ़ उतर रहे थे। दो सप्ताह मे उनका दर्द पूरी तरह ठीक हो गया और अब दस माह बीत चुके है वें पीडा मुक्त है। चिकित्सक का कहना है कि उन्होने इस प्रकार की शारीरीक पीडा वाले कम से कम 10 मरीजों को सफलता पूर्वक व्हाइब्रो की खुराक दी है।

The above is an interesting alternative to using NM97 Sciatica, which is what the condition is.

108 सी. सी. बक्सा इस्तमाल करने वाले निम्न सम्मिश्रण दे सकते है– CC20.3 Arthritis + CC20.4 Muscles & Supportive tissue

++

7. सब्जीयों के पेड का रक्षण 0002...भारत

नीम तेल का छिड़काव, गोबर खाद तथा जैविक खाद देने के बावजूद भी व्हाइब्रो चिकित्सक के बगीचे मे लगे सब्जीयों के कुछ पेड जैसे कुम्हडा, टमाटर और फ्रेन्च बीन मे पहली फसल के तुरंत बाद पाउडर के समान फफुंद लगनेसे पेड मर जाते थे।
पानी मे एक बूंद **SR264 Silicea 6X** मिलाकर पेडों को रोपित करने के तुरंत बाद तथा उनकी बाढ़ के दौरान हर सप्ताह देने की सलाह उन्हे दी गई। इस आसान इलाज के आश्चर्यजनक परिणाम देखने मिले। मुर्झाने वाले पेड़ पुनः बढ़ने लगें और फलने लगे। नए पेड़ मजबूत, स्वस्थ एवं अति उपजाउ होने लगे।

This information comes from* Homoeopathy for Farm & Garden *by Vaikanthanath Kaviraj. Also recommended is soaking seeds in Silicea 6x prior to germinating.

एक अन्य चिकित्सक लिखते है कि अरूविली के किसी उत्पादक ने **Silicea 30C** पेडो पर आजमाया है और जैविक खाद से भी बेहतर परिणाम पाए है।

****

महत्वपूर्ण अनुस्मारक:

साईराम पोटेन्टाइजर का उपयोग करने वाले चिकित्सकों से आज कल हमे सफल इलाजों कि जानकारी मिलनी कम हो गई है, जब कि चमत्कारीक रोग निवारणों कि घटनाएं हम विभिन्न चिकित्सकों से सुनते रहते है। कृपया सभी चिकित्सकों के तथा विश्व भर के मरीजों के लाभ हेतु आपके सर्वोत्तम केसेस की जानकारी इस पत्रिका मे प्रकाशन हेतु हमे भेजते रहिए।

****

स्वास्थ्य नुस्के

(Health Tips)

साई व्हाइब्रियोनिक्स द्वारा स्वास्थ्य संबंधी जानकारी एवं लेख केवल शिक्षा हेतु दिए जाते है; यह जानकारी वैद्यकीय परामर्श नही है। मरीजों की विशिष्ट वैद्यकीय अवस्था हेतु उन्हे उनके अपने डाक्टर से परामर्श करने की सलाह दे।

दिल का दौरा पडने की 8 चेतावनीयां (लक्षण)

निम्न लिखित 8 लक्षणों को चेतावनी मानकर अनर्थकारी परिस्तिथि को टाला जा सकता है।

1. सांस भर आना

दिल का दौरा पडने का आम लक्षण है घबराहट या छाती इस कदर भर आना जो अचानक हो, तीव्र हो, और साथमे सांस फूले, पसीना छुटे, मतली या वमन एवं कमजोरी भी महसूस हो। छाती मे जलन भी हो सकती है। शारीरीक कार्य करने पर होने वाली घबराहट, जो विश्रांति के बाद रुक जाए। इनमे से किसी भी लक्षण को नजर अंदाज नही करना चाहिए खांस कर अगर आप ह्रदय विकार के मरीज है। अगर आप के साथ ऐसा हो तब आपको तुरंत डाक्टर के पास अथवा नजदीकी अस्पताल जाना होगा। अगर आपके साथी के साथ ऐसा हो तब आपको बगैर समय गंवाए उसे डाक्टर के पास अथवा नजदीकी अस्पताल मे चेक अप करवाने के लिए ले जाना होगा।

2. छोटी – छोटी सांसे (Shortness of Breath)

जरा भी चलने, चढ़ने, हलचल अथवा व्यायाम करने पर अगर आप की सांस भारी हो जाए अथवा आपको सांसे कम पडने लगे, तब यह अवश्यहि चिंता की बात है। विश्रांति के बावजूद भी अगर सांसे सामान्य न होने पर, भले ही छाती मे कोई तकलीफ न हो फिर भी यह चेतावनी समझनी चाहिए। छोटी सांसो के साथ अगर ह्रदय गती तेज हो (150 प्रति मिनट से अधिक) इसे भी चेतावनी समझना चाहिए।

3. पसीना

हांलांकि गर्मीयों मे पसीना आना स्वाभाविक है परंतु ठंडे मौसम मे बहोत ज्यादा पसीना आना असामान्य बात है। ऐसी स्थिति मे तुरंत डाक्टर से संपर्क करे।

4. मतली

लगातार मतली आना या चक्कर आना हार्ट अटॅक की शुरुआत का संकेत हो सकता है। उसे थकान का लक्षण मानकर नजर अंदाज मत किजिए। यह अवस्था धमनी के अवरुद्ध होने से उत्पन्न हो सकती है। आहार तथा निद्रा सामान्य होने पर भी महसूस की जाने वाली कमजोरी, हलकी गतिविधियों के करने पर भी महसूस किया जा रहा तनाव अथवा थकान चिंता की बात हो सकती है।

5. भुजाओं मे संवेदनशून्यता (Numbness in Arms)

भुजाओं अथवा पांवों मे अचानक कमजोरी आना अथवा लकवा (paralysis - inability to move); अगर आप की भुजाओंमे संवेदनशून्यता महसूस हो रही हो तो वह ह्रदय विकार का कारण हो सकता है।

6. सिरदर्द अथवा चक्कर आना

अचानक तीव्र सिरदर्द अथवा लगातार चक्कर आना या सिर हल्का होना, अधीरता तथा/अथवा भ्रम की स्थिति भी सम्भावित लक्षण हो सकते है। ह्रदय विकार के मरीज़ को सहायता देते समय अगर चक्कर के साथ साथ मरीज मूर्च्छित हो रहा हो तो तुरंत चिकित्सीय सहायता लिजीए।

7. अप्रतिक्रियाशीलता

अगर शरीर के कुछ अंग प्रतिक्रिया न दिखा रहे हो, नजर अंदाज न किजीए। यह अंग कंधा, भुजाए अथवा गर्दन का पिछ़ला हिस्सा हो सकते है।

8. अस्पष्ट उच्चारण

बोलते समय जीभ का लडखडाना अथवा अस्पष्ट उच्चारण गंभीर बात हो सकती है। संसक्तता से बोलने की असमर्थता तीव्र ह्रदय विकार का संकेत माना जा सकता है। अगर आप के साथ ऐसा हो तो अपने मित्र अथवा रिश्तेदारों को आपकी बात समझाने का प्रयास करे।

यथासमय संकेतो की सही पहचान करने से दिल का दौरा टाला जा सकता है। उपरोक्त किसी एक या अनेक लक्षणों के नजर आने पर तुरंत चिकित्सीय सहायता ले। यह लक्षण धमनी के अवरुद्ध होने का परिणाम हो सकते है। अगर वह दिल का दौरा न भी हो फिर भी चिकित्सा जांच टालनी नही चाहिए। अपना ख्याल रखे।

दिल का दौरा अथवा आघात के 7 खतरे है टी.व्ही. देखना, खर्राटे भरना, मसूडों का रोग, छाल रोग (Psoriasis), अधकपारी, विटामिन 'डी' की कमी, जटील गर्भावस्था। इन खतरों कि अधिक जानकारी के लिए लौग ऑन करे http://health.yahoo.net/experts/dayinhealth/7-hidden-heart-attack-stroke-risks

दिल के दौरे से जुडी अधिक जानकारी के लिए अमरीकी रोग नियंत्रण केन्द्र से संपर्क करे।
http://www.cdc.gov/heartdisease/faqs.htm

Sources: WebMD.com and CDC.gov, Swanson Research Update

++

बहुगुणी हलदी से स्वास्थ्य लाभ

'हलदी' नामक मसाला दक्षिण आशियाई देशों मे इस्तमाल किया जाता है। हलदी का मूल भारत से है जहां यह अन्न तथा औषधी के रुप मे सदीयों से इस्तमाल किया जाता रहा है। अद्रक का यह सगा सम्बन्धी मसालेदार सब्जीयों का प्रमुख घटक है। हलदी मे अंतर्भूत प्राकृतिक चिकित्सीय घटक है **curcumin**, जो उसे पीत वर्ण प्रदान करता है।

विश्व के अग्रणी विश्व विद्यालयों मे हांलही मे किए गए निहित चिकित्सीय गुणों के अनुसंधान के फलस्वरुप **curcumin** चर्चा मे रहा है। संकलीत प्रमाण इस ओर संकेत करते है कि **curcumin** अनेक रोगो के निवारण का विश्वसनीय एजन्ट है। उन्ही मे से कुछ परिक्षण परिणाम निम्नानुसार है–

हलदी और कर्करोग

हलदी और कर्करोग के संबंध पर अनुसंधान किया गया। परिक्षण से संकेत मिले है कि कैन्सरस और क्षतिग्रस्त कोशिकाओं के आत्मघात की प्रक्रिया हलदी के कारण प्रेरित होती है। हलदी के जीवाणु अवरोधी गुणों के कारण वह अनेक कर्करोगो जैसे वक्षस्थल, मलाशय, फेफडों तथा रक्तकोशिकाओं के कर्करोग पर प्रभावी इलाज है।

टेक्सास विश्वविद्यालय मे चूंहो पर किए गए परिक्षण मे सिद्ध हुआ है कि **melanoma** नामक त्वचा के कर्करोग तथा वक्ष के कर्करोग को (फेफडो मे) फैलने से **curcumin** रोकता है। शोधकर्ताओं ने पाया कि **curcumin** के पूर्व इलाज से कर्करोग की कोशिकाए केमो तथा रेडीओ थेरपी के आघातयोग्य हो जाती है।

हलदी और यकृत प्रक्रिया

किण्वक **(enzymes)** के स्रवण द्वारा रक्त का शुद्धिकरण करने मे यकृत सहायता करता है।एन्जाइम्स विघटित हो कर शरीर से जैवविषों को हटाते है। हलदी के सेवन अथवा व्यंजनविधि मे समावेश से इन आवश्यक एन्जाइम्स का निर्माण अधिकमात्रा मे होकर यकृत प्रक्रिया मे वृद्धि होती है। ऑस्ट्रिया की ग्राझ मेडिकल युनिवर्सिटी मे किए गए प्राथमिक परिक्षणों मे यह पाया गया कि **curcumin** के कारण सिरोसिस मे परिवर्तित होने वाली यकृत की हानी टल सकती है।

गठियां रोग (Arthritis) के लिए हलदी

हलदी के ऑक्सिकरण अवरोधी एवं सूजन निवारक गुणों (**anti-oxidant and anti-inflammatory properties**) के कारण मध्यम और कम तीव्रता के जोडों के दर्द से पिडीत मरीजो को राहत मिलती है। गठियां रोग से पिडीत मरीजों ने हलदी के इस्तमाल से प्रातः तथा संध्या मे होने वाले जोडदर्द से राहत पायी है। हलदी का इस्तमाल अब प्राकृतिक इलाज के रुप मे सामने आ रहा है जो गठियां रोगीयों के दर्द निवारण के साथ साथ चलने की गती बढाने मे भी सहायक सिद्ध हो रहा है।

हलदी और जख्म

जीवाणु अवरोधी तथा सूजन निवारक (**anti-bacterial and anti-inflammatory agent**) गुणो के कारण जख्म भरने मे एवं त्वचा के कटने फटने पर हलदी प्रभावकारी होती है। कढाइ मे नारीयल तेल उबालकर उसमे थोडी हलदी छोडिए, अच्छी तरह मिलाने के बाद आंच बंद कर दिजीए। ठंडा होने के बाद कपास से जख्म पर लगाइए। बंद डिब्बे मे हवा से बचाकर रखने से यह मिश्रण कई दिनो तक इस्तमाल किया जा सकता है।

हलदी तथा अल्जेइमर रोग

अल्जेइमर रोग का मुख्य कारण मस्तिष्क की सूजन समझा जा रहा है। परिक्षणों मे पाया गया कि हलदी का इस्तमाल अल्जेइमर रोग को टालने मे सहायक होता है। हलदी के ऑक्सिकरण अवरोधी एवं सूजन निवारक गुणों (**anti-oxidant and anti-inflammatory properties**) के कारण संभवतः इस निर्दयी रोग को टाला अथवा रोका जा सकता है। ऐसा माना जा रहा है कि नसों के रक्षा कवच को नष्ट करने की क्षमता वाले **IL-2 protein** के स्रवण को हलदी प्रतिबंधित करती है।

महामारी विशेषज्ञों ने यह अनुमान लगाया है कि भारतीय लोगो के आहार मे मसालेदार सब्जीयों के माध्यम से सेवन की जाने वाली हलदी के कारण इस देश मे अल्जेइमर रोग के मरीजों कि संख्या कम है। 70 से 79 आयु के भारतीय व्यक्तियों के इस रोग से पिडीत होने का दर अमरीकी दर की तुलना मे एक चौथाइ से भी कम है।

हलदी और ह्रदय विकार

अधिकतर ह्रदय विकारों का प्राथमिक कारण है हानिकारक कोलस्ट्रल का स्तर। आक्सिकृत कोलस्ट्रल शरीर की कोशिकाओं की परत बन कर रह जाता है। हलदी मे विटामिन **B6** होता है जो शरीर की कोशिकाओ को नष्ट करने वाले **homo-cysteine** का स्रवण नियंत्रित करता है। यकृत की पारस्परिक क्रिया की मदद से हलदी शरीर के कोलस्ट्रल का स्तर घटाती है; जो अधिकतर ह्रदय विकारों को टालने मे सहायक सिद्ध होता है।

जपान मे किए गए चिकित्सीय परिक्षणों मे पाया गया कि curcumin की खुराक से रजोनिवृत्ति काल मे ठीक उतना ही लाभ होता है जितना कि नियमित व्यायाम से। *Nutrition Research* नामक पत्रिका मे प्रकाशित जांच परिणामो नुसार curcumin की खुराक और एरोबिक व्यायाम करने वाले महिलाओ के समूह की Vascular health वाहिकीय स्वास्थ्य flow-mediated dilation (FMD) द्वारा नापा जाने पर दोनो ही समूहों कि महिलाओ मे समान पाया गया।

अमरीकी स्वास्थ्य संस्था द्वारा हलदी तथा उसके मुख्य घटक curcumin के प्रभाव पर हालही मे किए गए 24 परिक्षणों को सूचिबद्ध किया है। इन परिक्षणों के कारण सवाल यह उठ रहा है कि बेहतर क्या हैः सैगी हलदी जिसे मासलों के रुप मे इस्तमाल किया जाता है या curcumin जिसे दवां के रुप मे लिया जाता है। डा. एन्ड्रयू वील के अनुसार ''दोनो हि स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद है, परंतु अगर आपको कोइ बिमारी (जैसे ऑत की सूजन

इत्यादि) नही है तब मै curcumin गोलीयों की अपेक्षा हलदी को मसाले के रुपमे इस्तमाल के पक्ष मे रहुंगा। यह मेरे विश्वास को प्रकट करता है कि, जब तक पूर्ण परिक्षणों द्वारा सिद्ध न हो जाए, सैगी वनस्पती उसके पृथक तत्व से बेहतर विकल्प है। वहीं दूसरी ओर, curcumin के शीघ्र एवं चमत्कारीक प्रभाव के कारण वह रोगनिरोधी की अपेक्षा औषधी इलाज के रुप मे लेना बेहतर होगा।

Sources:http://www.huffingtonpost.com/andrew-weil-md/turmeric-health-have-a-happy-new-year_b_798328.html
http://nccam.nih.gov
http://feelgoodtime.net/what-are-benefits-and-side-effects-of-curcumin-kurkumin-curcumin-for-cancer-and-dosage/
http://turmerichealthbenefits.org/
http://www.nutraingredients-usa.com/Research/Curcumin-may-match-exercise-for-heart-health-benefits-RCT-data
http://neovitin.com/curcumin.aspx

****

सवालों के जवाब

1. प्रश्न: क्या कंपनों को आयुर्वेदिक औषधी तेल मे मिलाकर त्वचा पर लगाने हेतु इस्तमाल किया जा सकता है?

उत्तर: वर्तमान मे, हम ऐसी सलाह नही देते क्योंकि हमारा मानना है कि आयुर्वेदिक औषधी के कंपन व्हाइब्रो कंपनों मे हस्तक्षेप कर सकते है। हम बादाम तेल, जैतून तेल या नारीयल तेल का इस्तमाल करते है क्योंकि वें न्यूट्रल अर्थात निःष्पक्ष होते है। यद्यपि हम पुनर्निवेशन (feedback) चाहते है उन व्यक्तियों से जो कंपनों को आयुर्वेदिक औषधी मे मिलाकर आजमाना चाहते है।

++

2. प्रश्न: कंपन तथा ॲलोपॅथिक दवां रोग निवारण मे एक दूसरे को पूरक कैसे होती है?

उत्तर: ॲलोपॅथिक दवां दैहिक अथवा स्थूल स्तर पर कार्य करती है तथा कंपन उससे उच्च अथवा सूक्ष्म स्तर पर कार्य करते है अतः रोग निवारण शीघ्र होने मे सहायता होती है।

++

3. प्रश्न: 108 सी.सी. पुस्तिका मे कुछ होमिओपॅथिक दवांओ का जिक्र किया गया है। क्या इसका अर्थ यह है कि काम्बो मे होमिओ दवां मिलायी गई है?

उत्तर: नही! कामन काम्बो मे केवल **कंपन** है जिनमे कुछ उपयुक्त होमिओ दवांओं के कंपन भी सामिल है।

++

4. प्रश्न: क्या मरीज ने लंबी बिमारी की अनुरक्षण खुराक *maintenance dose for a chronic illness* के साथ अन्य अल्पावधी अथवा लंबी अवधी की बिमारी के कंपन शुरु करने चाहिए?

उत्तर: लंबी अवधीकी chronic बिमारी के लिए हां! परंतु अनुरक्षण तथा नई रेमेडी की खुराक के बीच कम से कम एक घंटे का अंतर हो। यद्यपि ॲक्यूट बिमारी की अवस्था मे अनुरक्षण खुराक थोडी अवधी के लिए बंद की जा सकती है।

++

5. प्रश्न: मै सोचता हुं कि श्री सत्य सांई सेवा संगठन अपने आप को व्हाइब्रियोनिक्स से दूर रखती है जो हतोत्साहित होने वाली खबर है, खांस कर समाधी के बाद से ऐसा महसूस किया जा रहा है! कृपया मार्गदर्शन करे।

उत्तर: वास्तविकतः श्री सत्य सांई सेवा संगठन व्हाइब्रियोनिक्स वर्कशाप तथा अन्य गतिविधियों मे हमारी मदद कर रहे है, बशर्ते संघटन का नाम बैनर पर न लिखा जाए। ध्यान रहे, सन 1994 से लेकर सन 2011 तक अनेको बार स्वामी ने व्हाइब्रियोनिक्स प्रणाली के उद्विकास की हर पादान पर वरद हस्त से प्रत्यक्ष आशिर्वाद दिए है।

++

6- प्रश्न: क्या व्हाइब्रियोनिक्स का उपयोग कृषि मे कीटक नियंत्रण के लिए किया जा सकता है?

उत्तर: 108 सी.सी. बक्से मे दिया **CC1.2 Plant tonic** पेडों को मौसम की खराबी, जैसे कोहरा या तूफान, फफूंदी, कीटक पर्याक्रमण आदि के कारण होने वाले नुकसान से बचाएगा। मूल रेमेडी बनाने के लिए एक लिटर पानी मे 5 बूंद सी.सी. 1.2 के मिलाकर उसे 1:10 के अनुपात मे बढाया जा सकता है। इसे नियमित रुपसे पेडो पर छिडकने तथा जमीन के सिंचन के लिए इस्तमाल किया जा सकता है।

If using a Sai Ram Potentiser give: NM12 Combination-12 + NM20 Injury + NM25 Shock + NM91 Paramedic Rescue + SM2 Divine Protection + SM4 Stabilising + SM5 Peace & Love Alignment + SM6 Stress + SM14 Chemical Poison + SM26 Immunity + SM41 Uplift + SR315 Staphysagria + SR325 Rescue + SR327 Walnut + SR329 Crab Apple + SR360 VIBGYOR + SR428 Gorse + SR432 Hornbeam + SR437 Oak + SR438 Olive + SR566 Fungi-pathogenic

Practitioners: Do you have a question for Dr. Aggarwal? Send it to him at news@vibrionics.org

****

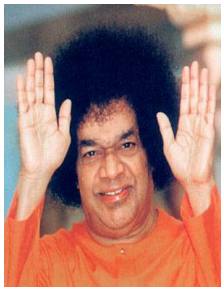

ॐ रोग निवारण कर्ता के दैवी वचन ॐ

ॐ Divine Words from the Healer of Healers ॐ

'' निरंतर अच्छे विचारों को विकसित करना तथा सत्कार्य करना हि आध्यात्मिक साधना है''

सत्य सांई बाबा–रेडिओ सांई नवं 30, 2012

++++++++++

'' जीवन के उतार चढावों को सहजता से लिजिए। समास और घटकों की इस दुनिया मे वें प्रासंगिक है। जब खाली पत्तल बिछाई जाती है, वह हवा मे उडने की चेष्ठा करती है। परंतु जब उस पर व्यंजन परोसे जाते है, अन्न और पत्तल दोनो हि स्थिर हो जाते है। उसी तरह अपने मन और ह्रदय रुपि पत्तल पर विश्वास, अचल अनुशासन, भक्ति, अनासक्ति और मन की स्थिरता परोस दो, ये सभी आध्यात्मिक व्यंजन है। इससे हर आघात पर डूबने का खतरा टल जाएगा। सत्य का ज्ञान होने पर आप पाएंगे कि न खुशकिस्मती की चाहत करनी चाहिए और न ही बदकिस्मती से दुखी होना चाहिए। वीर पुरुष दोनो अवस्थाओ मे एकसी उदासीनता का परिचय देते है। लाभ और हानि ऐसे हवा के झोके और तूफान है जो सच्चे भक्त के ह्रदय मे स्थित आनंद सागर की गहराई तक पहुंच नही सकते ।

सत्य सांई बाबा– दिव्य संदेश, अक्तूबर 19, 1966

++++++++++

'' कर्म बीज की बुआई, प्रवृत्ति की फसल,

प्रवृत्ति की बुआई, चारित्र्य की फसल, चारित्र्य की बुआई, भाग्य की फसल,

आप ही है अपने भाग्य विधाता, आप भाग्य निर्माण कर सकते हो अथवा मिटा भी सकते हो''

सत्य सांई बाबा– दिव्य संदेश, सत्य सांई विश्व विद्यालय का दसवां दीक्षांत समारोह, नवं 22, 1991

****

ॐ सूचनाए ॐ

आगामी वर्कशाप

- **भारत, बेंगलुरु,** एव्हिपी तथा जेव्हिपी वर्कशाप दिनांक 23–24 फरवरी 2013, संपर्क शेखर at rsshekhar@aol.in or by telephone at +91-9741 498 008.
- **भारत नई दिल्ली** जेव्हिपी वर्कशाप दिनांक 24 फरवरी 2013, संपर्क संगीता at trainer1.delhi@vibrionics.org
- **भारत पुट्टपर्ती** एसव्हीपी वर्कशाप दिनांक 1–5 मार्च 2013, संपर्क हेम at 99sairam@vibrionics.org
- **भारत पुट्टपर्ती** एव्हीपी वर्कशाप दिनांक 9–10 मार्च 2013, संपर्क हेम at 99sairam@vibrionics.org
- **पोलैन्ड, रोक्ला. (Poland, Wroclaw).** जे.व्हि.पी. वर्कशाप तथा विद्यमान ए.व्हि.पी.ज के लिए रिफ्रेशर कोर्स दिनांक 27–28 अप्रैल **2013**.
- **Poland** (**venue** to be decided) Senior VP workshop 27-29 September **2013**. Contact Dariusz Hebisz at +48 606 879 339 or by email at wibronika@op.pl for all workshops in Poland.
- **Greece Athens**: JVP and practitioner refresher workshops 11-13 October 2013, contact Vasilis at saivasilis@gmail.com or by telephone at +30-697-2084 999.

सभी ट्रेनर्सः अपने वर्कशाप शेडयुल की विस्तृत जानकारी निम्न पते पर दे –
99sairam@vibrionics.org

****

ATTENTION PRACTITIONERS

If your email address changes, please inform us at news@vibrionics.org as soon as possible. Please share this information with other vibro practitioners.

You may share this newsletter with your patients. Their questions should be directed to you for answers or for research and response. Thank you for your cooperation.

Our website is www.vibrionics.org
Practitioners; you will need your assigned Vibro Registration number to access the Practitioner Portal.

Jai Sai Ram!

Sai Vibrionics...towards excellence in affordable medicare - free to patients